अशोक का धम्म (धर्म)

डॉ. के.के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

प्रारम्भ में अशोक ब्राह्मण धर्म का अनुयायी था। महावमसा के अनुसार वह प्रतिदिन 60,000 ब्राह्मणों को भोजन कराता था तथा अनेक देवी–देवताओं की पूजा करता था। कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार अशोक शिव का पूजक था। परन्तु कलिंग के युद्ध के पश्चात् उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया।

तब भी अशोक का धर्म अथवा धम्म क्या था, इस विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद रहा है यद्यपि वह मतभेद बहुत गम्भीर नहीं है। डॉ. आर. जी. भण्डारकर ने लिखा है रू ष्अशोक का धर्म, धर्म–निरपेक्ष बौद्ध धर्म के अतिरिक्त कुछ नहीं है। डॉ. एन. के. शास्त्री ने लिखा है : "अशोक ने बौद्ध धर्म को एक शुष्क बौद्धिक ज्ञान की खोज के स्थान पर एक आकर्षक, भावनात्मक एवं लोकप्रिय धम में परिवर्तित कर दिया। डॉ. एफ. डब्ल्यू. थॉमस ने लिखा है: "अशोक, निस्सन्देह, बौद्ध मतावलम्बी था। वह पहले मात्र उपासक था, जो बाद में भिक्षु बन गया। तत्पश्चात् उसने धर्म के प्रति सम्मान और अपने व्यक्तिगत विश्वास की घोषणा भी की। परन्तु डॉ. थॉमस यह भी लिखते हैं: "दूसरी तरफ हम उससे धर्म के गहन विचारों और मौलिक सिद्धान्तों के बारे में कुछ भी नहीं सुनते।वह लिखते हैं कि हमें उसके विचारों में कहीं भी चार–सत्य, अष्टांग मार्ग, जीव के आवागमन के सिद्धान्त आदि के बारे में कुछ भी प्राप्त नहीं होता। इसी विचार को डॉ. स्मिथ ने आगे बढ़ाते हुए लिखा है: "अशोक का धम्म किसी एक सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्धित न था अपितु वह सभी भारतीय धर्मों के लिए समान था। इसी प्रकार, डॉ. आर. के. मुखर्जी लिखते है : अभिलेखों का धर्म किसी एक धर्म अथवा किसी एक धार्मिक सम्प्रदाय का धर्म न होकर जाति अथवा धर्म से पृथक एक नैतिक कानून है। इस प्रकार, कुछ विद्वान यह मानते हैं कि अशोक बौद्ध धर्म का मानने वाला था और उसने बौद्ध धर्म अथवा उसके कुछ परिवर्तित स्वरूप का प्रचार किया और कुछ अन्य विद्वान यह मानते हैं कि अशोक का धर्म अथवा धम्म बौद्ध धर्म न होकर उसके कुछ नैतिक स्वीकृति तथा उनका प्रचार मात्र था। परन्तु सभी विद्वान यह स्वीकार करते हैं कि अशोक ने बौद्ध धर्म के मूल सिद्धान्तां का नहीं अपितु उसके कुछ नैतिक सिद्धान्तों का ही प्रचार प्रसार कि जो निस्सन्देह बौद्ध धर्म से प्रेरणा प्राप्त तो थ परन्तु जो अन्य सभी भारतीय धर्मा में भी किये जा सकते हैं। यह भी माना जाता है कि उसने व्यक्तिगत दृष्टि से बौद्ध धर्म कर लिया था। कलिंग के युद्ध के पश्चात् अशोक

ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, वह बौद्ध संघ में भी रहा और वह बौद्ध तीर्थस्थानों पर जाता था, यह सभी मानते मुखर्जी ने लिखा है कि अशोक की स्थिति "उपासक और भिक्षु के मध्य में 'भिक्षुगतिक' की थी।"

इस आधार पर आधुनिक समय में यह विश्वास किया जाता है कि अशाक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध धर्म था। भाब्रलघु के शिलालेख में उसने बौद्ध धर्म के तीन रत्न–बुद्ध, धर्म और संघ—में अपनों आस्था स्पष्ट रूप से प्रकट की है। उसने बौद्ध धर्म और साथ में एकता बनाये रखने का भी प्रयत्न किया था। परन्तु अशोक ने जिस धर्म का प्रचार किया. और जो अशोक धम्म कहलाया, वह बौद्ध धर्म से प्रेरणा प्राप्त कुछ नैतिक और सामाजिक नियम थे जिन्हें सभी धर्मों में समान रूप से पाया जा सकता है। इस कारण, अशोक अपने प्रजा से जिस धर्म का अनुसरण कराना चाहता था वह उसके व्यक्तिगत धर्म से पृथक था।

जिन कारणों से अशोक के धर्म का निर्माण हुआ उनमें यह आवश्यक भी था कि वह अपने व्यक्तिगत धर्म तथा उस धर्म में अन्तर करता जिसे वह अपनी प्रजा में फैलाना चाहता था। अशोक का व्यक्तिगत धर्म तो बौद्ध धर्म था परन्तु जिस धर्म को अशोक ने अपनी प्रजा में फैलाने का प्रयत्न किया वहीं उसका 'धर्म' अथवा 'धम्म' पुकारा जाने का अधिकारी है। अशोक के इस धर्म के निर्माण में विभिन्न परिस्थितियाँ उत्तरदायी रही। मौर्य वंश धर्म के विरुद्ध न था परन्तु वह नवीन जैन और बौद्ध धर्म के पक्ष में था। प्रथम मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त अपने अन्तिम समय में जन मतावलम्बी हो गया था। अशोक का भी इन नवीन धार्मिक आन्दोलनों के प्रति सहृदय होना उसके पारिवारिक वातावरण के इसके अतिरिक्त, इन आन्दोलनों ने समाज को विभाजित कर दिया था। नवोदित अनुकूल व्यापारी–वर्ग और नगरों में उसकी शक्ति के बढ़ने से यह सामाजिक विभाजन और अधिक तीव्र हो गया था। जनसाधारण को सहानुभूति भी इन नवीन धार्मिक विचारों के प्रति थी। ऐसी स्थिति में सामाजिक एकता को बनाये रखने और जनसाधारण की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए अशोक ने अपने 'धम्म' के विचार को जन्म दिया। डॉ. रोमिला थापर ने लिखा है। "अशोक के इस कार्य में इस तथ्य से सहायता मिली कि इन सम्प्रदायों को नवोदित व्यापारी वर्ग का समर्थन प्राप्त था और जनसाधारण का बहुमत इनके विरुद्ध न था। इसके अतिरिक्त, ये नवीन विचार उम्र रूप से पुराने विचारों के विरुद्ध न थे जिसके कारण दोनों में समझौता सम्भव था। इस प्रकार, अशोक ने धम्म के विचार को ग्रहण करने में व्यावहारिक साम्राज्य बहुत विस्तृत था और उसके नागरिकों में परस्पर इतने अधिक सांस्कृतिक मतभेद लाभ देखा।" राज्य की राजनीतिक आवश्यकताएँ भी इसके पक्ष में थीं। अशोक का साम्राज्य बहुत विस्तृत था और उसके

नागरिकों में परस्पर इतने अधिक सांसकृतिक मतभेद थे कि उन्हें एक सूत्र में बाँधने के लिए समान धार्मिक विचारधारा की आवश्यकता थी। नवीनतम विजित प्रदेश अथवा छोटी–छोटी स्वतन्त्र राजनीतिक इकाइयों को एक राजनीतिक एकता में बाँधने के लिए भी इस प्रकार की आवश्यकता थी। एक ऐसी विचार धारा जो सभी के अनुकूल हो, इस कार्य की पूर्ति कर सकती थी। डॉ. रोमिला थापर ये लिखा है: "एक नवीन धर्म (विश्वास) को अपनाना और उसका सक्रिय प्रचार करना (राज्य को छोटी इकाइयों को सम्मिलित करके साम्राज्य को एक सूत्र में बंधिने वाली शक्ति कह कार्य कर सकता था। उसका प्रयोग विजित भू–क्षेत्रों के संगठन के लिए भी किया जा सकता या यदि वह प्रयोग सावधानी से किया जाता और उसे इच्छा न रखने वाले व्यक्तियों पर जबरदस्ती न लादा जाता।" इन सामाजिक और राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अशोक ने बौद्ध धर्म का सहारा लिया जो उस समय का एक प्रभावशाली आन्दोलन था। डॉ. रोमिला थापर ने लिखा हैः 'अशोक निश्चय ही बौद्ध धर्म को और आकर्षित हुआ और उसका अनुयायी बन गया। लेकिन उसके समय का बौद्ध धर्म केवल एक धार्मिक विश्वास न था अपितु वह विभिन्न स्तरों पर समाज को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करने वाला एक सामाजिक और बौद्धिक आन्दोलन था। निश्चय ही एक कुशल राजनीतिज्ञ के लिए उससे समझौता करना आवश्यक था। परन्तु राजनीति के लिए धर्म का प्रयोग करत हुए भी अशोक धर्म के प्रति वास्तव में श्रद्धालु था। बौद्ध धर्म उसके लिए एक व्यक्ति और शासक दोनों ही दृष्टियों से लाभप्रद था।

उपर्युक्त आधारों पर अशोक ने अपने धर्म (धम्म) का निर्माण किया। 'धम्म' प्राकृत भाषा का शब्द है जिसे संस्कृत भाषा में धर्म पुकारते हैं। धर्म को व्याख्या अथवा उसका दर्शन अव्यन्त विस्तृत है। अशोक ने उसी विस्तृत आधार पर अपने धर्म का निर्माण किया। उसने जिस धर्म का प्रचार किया उसकी निम्नलिखित विशेषताएं थीं:

(i) उसने कुछ नैतिक सिद्धान्तों के व्यवहार पर बल दिया जिनका आरम्भ परिवार से होता है। एक व्यक्ति को परिवार के सभी सदस्यों से उचित व्यवहार करना चाहिए। बड़ों का सम्मान, पारस्परिक प्रेम, गुरु के प्रति श्रद्धा, मित्रों से सद्व्यवहार, ब्राह्मण, श्रवण तथा साधुओं का सत्कार, दासों, निर्धनों एवं असहायों के प्रति कृपा, दान आदि मनुष्य के कर्तव्य है।

(ii) अपने दूसरे तथा सातवें स्वम्भ–अभिलेख में अशोक ने व्यक्ति के लिए दया, दान, सत्यता, पवित्रता और सदाचार पर बल दिया। मनुष्यों को इन गुणों का पालन करना चाहिए।

(iii) अहिंसा पर उसने अत्यधिक बल दिया। अशोक कर्मकाण्ड और बलि–प्रथा विरुद्ध था। मानव के प्रति ही नहीं अपितु पशुओं के प्रति भी मनुष्य को दया का व्यवहार करना चाहिए। इस कारण वह पशु–हत्या अथवा पशु–बलि कि विरुद्ध था। अपने धर्म में उसने इसका प्रचार किया।

(iv) उसने व्यक्तियों को ईर्ष्या कोध, पाप, दम्भ और क्रूरता को त्याग देन को कहा।

(v) उसने व्यक्तियों को कर्मकाण्ड को छोड़कर धर्म–मंगल, धर्म–दान के धर्म–विजय के लिए कहा।

(vi) उसने उपर्युक्त सभी व्यक्तिगत गुणों को सामाजिक गुणों में परिवर्तित करने के लिए कहा।

(vii) उसने सभी सम्प्रदायों से परस्पर सहिष्णुता का व्यवहार करने के लिए कहा। अपने 12वें शिलालेख में उसने लिखवाया था कि सभी व्यक्ति सभी स्थानों पर रहें, सभी एक–दूसरे से मीठा बोलें, सभी अपने हृदयों को शुद्ध बनाये, कोई भी दूसरों को निन्दा न करे और अपनी तथा सम्प्रदाय की प्रशंसा न करें, सभी एक–दूसरे के धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करें और सभी अपने व्यक्तिगत सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में अहिंसा का पालन करें।

उपर्युक्त व्यक्तिगत और सामाजिक नैतिकता तथा आचरण के नियमों ने अशोक के धर्म का निर्माण किया। इस प्रकार, यह नहीं कहा जा सकता कि अशोक ने बौद्ध धर्म के सिद्धान्त का प्रचार किया। अशोक का धर्म एक व्यावहारिक आचरण का धर्म था जिसके सिद्धान्त सभी धर्मों में पाये जा सकते है। अशोक का धर्म व्यक्ति को समाज के लिए उपयोगी बनाने पर निर्भर करता था। उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना प्रमुख थी। डॉ. रोमिला थापर ने लिखा है: "अशोक के लिए धम्म व्यावहारिक जीवन का एक ऐसा मार्ग था जिसे उसने अपने परिचित दार्शनिकों के नैतिक उपदेशों एवं सम्भवतया अपरे जीवन के अनुभव से प्राप्त किया था। वह एक श्रेष्ठतम सामाजिक नैतिकता और नागरिक उत्तरदायित्व को भावना पर निर्भर था। उसके धर्म का आधार अत्यधिक सहिष्णु था उसके सिद्धान्त हिन्दू, बौद्ध और अन्य सभी धार्मिक सम्प्रदायों के नैतिक नियमों से लिये गए थे। इस कारण अशोक का 'धम्म' स्वयं उसके द्वारा उत्पन्न किया गया था। डॉ. थापा लिखा है : "धम्म स्वयं अशोक का अन्वेषण था। अपने धर्म के प्रचार के द्वारा अशोक किसी एक विशेष धर्म का प्रचार नहीं किया अपितु उसका उद्देश्य अपने सभी नागरिकों को भलाई और उनमें सहिष्णुता एवं सामाजिक भावना को

जाग्रत करना था। डॉ. रोमिला थापा ने लिखा है– "अपने धर्म – प्रचार के द्वारा अशोक धर्म–प्रचार के संकीर्ण दृष्टिकोण में परिवर्तन करने, दुर्बलों की शक्तिशालियों से रक्षा करने और अपने साम्राज्य में एक विस्तत सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को जाग्रत करने का प्रयत्न कर रहा था, जिसका विशेध कोई भी सांस्कृतिक समुदाय नहीं कर सकता था।" अपने इसी उद्देश्य के कारण अशोक कहलाने का अधिकारी बना। उससे पहले और उसके पश्चात् सम्भवतया किसी भी सक ने अपने सम्मुख इतना विशाल दृ ष्टिकोण नहीं रखा। केवल मुगल बादशाह अकबर कुछ मात्रा में उसके निकट आ सकता है। धर्म–महामात्यों की नियुक्ति इस बात को सिद्ध होती है कि अशोक किसी एक विशेष धार्मिक सम्प्रदाय का समर्थन नहीं कर रहा था, अपितु वह अपने सभी नागरिकों को धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील था। यदि अशोक किसी एक विशेष धर्म के प्रचार का प्रयत्न करना चाहता सो धर्म महामात्यों की नियुक्ति की आवश्यकता न थी क्योंकि प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय अपने धर्म के प्रचार के लिए स्वयं समर्थ और स्वतन्त्र था, मुख्यतया बौद्ध संघ तो इस कार्य में अत्यधिक समर्थ थे। डॉ. रोमिला थापर ने लिखा है : "यदि धम्म (अशोक का धर्म) किसी एक धर्म, मुख्यतया बौद्ध धर्म से सम्बन्धित होता तो धर्म महामात्यों की नियुक्ति दुर्वा अनावश्यक थी।" धर्म– महामात्य अशोक के धर्म का प्रचार अवश्य करते थे परन्तु वे किसी एक विशेष धार्मिक सम्प्रदाय का समर्थन नहीं करते थे अपितु सभी व्यक्तियों एवं सभी धर्मों के आचरण पर बल देते थे। उनका एक प्रमुख कर्तव्य समाज के असहाय एवं दुर्बल वर्गों की रक्षा करना था।

अशोक के धम्म प्रचार के प्रयत्न

अशोक ने धर्म अथवा धम्म के प्रचार के लिए निम्नलिखित विभिन्न साधनों का प्रयोग किया:

(1) उसने विभिन्न स्थानों पर शिलाओं तथा स्तम्भों पर अपने विचारों को लिखवाया। ये शिला–अभिलेख और स्तम्भ लेख उसके प्रचार के साधन बने और उनसे यह भी पता लगता है कि उसने अपने धर्म के प्रचार के लिए किन साधनों का प्रयोग किया था। अशोक के समय के इतिहास को जानने के लिए भी यह बहुत उपयोगी हैं।

(2) उसने अपने व्यक्तिगत आचरण को धर्म के अनुकूल बनाया। उसने माँस खाना बन्द कर दिया, महल में पशु–वध कम कर दिया, दान और सार्वजनिक हित के कार्य किये, तीर्थयात्राएँ की तथा सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का व्यवहार किया।

बौद्ध–सभा के अवसर पर भी उसने 'आजीविकों' के लिए बाराबर को पहाड़ियों में निवास–स्थान (गुहाएँ) बनवाये थे।

(3) उसका सामाजिक व्यवहार धर्म के अनुकूल बन गया। उसने पशुओं की दौड़, लड़ाई, शिकार आदि के स्थान पर धार्मिक उत्सव तथा समारोह मनाने आरम्भ किये। उसने रंण–घोष के स्थान पर धर्म–घोष किया और राज्य विस्तार की नीति को त्याग दिया। उसका विश्वास 'धम्म–विजय' में हो गया और उसने कलिंग के युद्ध के पश्चात् कोई युद्ध नहीं किया।

(4) उसने धर्म–महामात्यों की नियुक्ति को जो उसके धार्मिक विचारों और सहिष्णुता की भावना को प्रसारित करने, विभिन्न सम्प्रदायों में सहयोग स्थापित करने, निर्बलों की रक्षा हथा असहायों की सहायता करने आदि कार्य करते थे।

(5) उसने राजुक, प्रादेशक और भक्त नामक अधिकारियों को भी इस प्रकार के कार्य करने के आदेश दिये।

(6) उसके समय में बौद्ध की तीसरी सभा पाटलिपुत्र में हुई जिसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की। इस सभा ने देश–विदेश में धर्म–प्रचार के लिए बौद्ध भिक्षुओं को विभिन्न स्थानों पर भेजा। महेन्द्र और संघमित्रा (सम्भवतया अशोक का सबसे बडा पुत्र और पुत्री) भी इसी सभा के द्वारा धर्म–प्रचार के लिए श्रीलंका भेजे गये।

(7) स्वयं अशोक ने सीरिया, मिस्र, साइप्रस, एपिरस, चोल और पाण्ड्य राज्य–आदि, विदेश तथा स्वदेश में धर्म प्रचारक भेजे।

निष्कर्ष

एक सीमित मात्रा में अशोक के उपर्युक्त प्रयत्न सफल रहे। उसके समय में उसकी प्रजा ने उसके धर्म का पालन किया और विदेशों में भी उसका प्रचार हुआ यद्यपि यह नहीं माना जा सकता कि अशोक साम्प्रदायिक और धार्मिक मतभेदों को समाप्त करने में सफल हुआ था।